❊ पंचम अध्याय ❊

साधुराम दर्शक की कहानियों का शिल्प

पंचम अध्याय

साधुराम दर्शक की कहानियों का शिल्प

प्रस्तावना :

द्वितीय अध्याय में साधुराम दर्शक की कहानियों के कथ्य पर विचार किया गया है। परंतु किसी भी रचनाकार की सफलता कथ्य के विशेषता पर निर्भर करती है, साथ ही उसमें शिल्प संयोजन का भी महत्त्व होता है। शिल्प अंग्रेजी के 'टेकनिक' शब्द का हिंदी रूपांतर है। शिल्पविधान के छः तत्त्व हैं - 'कथानक', 'चरित्र-चित्रण', 'देशकाल वातावरण', 'उद्देश', 'भाषाशैली' तथा शीर्षक आदि जिनके आधार पर उपन्यास, कहानी, नाटक जैसी अन्यन्य विधाओं की अपनी-अपनी शिल्पगत विशेषताएँ होती हैं। ''शिल्प से तात्पर्य वस्तुतः किसी चीज को बनाने या रचने के ढंग एवं तरीकों से अर्थात किसी वस्तु को रचने में जो-जो विधियाँ होती है उनके समुच्चय को शिल्प विधि के नाम से पुकारा जाता है। साहित्य कला के संदर्भ में शिल्प, किसी साहित्य या कलात्मक वस्तु को रचने के ढंग या तरीकों को कहते है।''[1] इस तरह साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति, उद्देश, विषय-वस्तु आदि को जिस साचे में बाँधकर प्रस्तुत करता है वह शिल्प है। अर्थात शिल्प की सफलता पर साहित्य की सफलता निर्भर होती है।

शिल्प के दो महत्त्वपूर्ण पक्ष होते हैं - आंतरिक पक्ष तथा बाहय पक्ष इस संदर्भ में आदर्श सक्सेना लिखते हैं - ''शिल्प उसी वक्त सार्थक बनता है, जब साहित्यकार के अंदर के भाव वह शिल्प के बाहय तत्त्व जैसे भाषा-शैली- शब्द, वाक्य, छंद, अलंकार आदि के आधार पर सरलता से प्रकट होते है। साथही शिल्प का बाहय पक्ष भी महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि बाहय पक्ष के आधार पर ही उसके अंदर के भाव को उद्धृत करता है।''[2] अर्थात कहानी मानव जीवन की अभिव्यक्ति होती है, व्यक्ति को केंद्रबिंदु बनाकर समाज तथा देश के विकास तथा अधोगति का यथार्थ चित्रण करती है। साथ ही मानव मन की आंतरिक भावनाओं को चित्रित करती है।

5.1 शिल्प : अर्थ :

शिल्प-विधि अंग्रेजी के 'टेकनिक' (Technique) शब्द का हिंदी रूप है। हिंदी में शिल्प-विधि, शिल्प विधान आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

5.1.1 बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश भाग - 2 :

"टेकनिक के लिए शिल्प-विधि, पध्दती, रचना प्रणाली, आदि का प्रयोग हुआ है।"

5.1.2 मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश :

"टेकनिक के लिए प्रविधि, शिल्प-विधान का प्रयोग मिलता है।"

5.1.3 शिल्प विधि का शाब्दिक अर्थ :

"शैली से ज्यादा व्यापक वह उपादान जिसके द्वारा रचनाकार अपनी भावनाओं को किसी विशेष ढंग से व्यक्त कर पाता है।"

5.2 शिल्प : परिभाषा :

शिल्प की परिभाषा अनेक विद्वानों ने की है। साथ ही शिल्प-विधि और रचना-विधि का एकही अर्थ में माना गया है।

I) **जैनेंद्रकुमार :**

"टेकनिक ढाँचे की नियमों का नाम है। पर ढाँचे जानकारी की उपयोगी इसी में है कि वह सजीव मनुष्य के जीवन में काम आये।"[13]

II) **डॉ.जवाहर सिंह :**

"शिल्प विधि से तात्पर्य किसी कृती के निर्माण की उन सारी प्रक्रियाओं तथा रचना पध्दतियों से है, जिनके माध्यम से शिल्पकार या रचनाकार अपनी अमूर्त जीवनानुभूतियाँ मनः प्रभावों तथा विचारों और भावों का मूर्त रूप देकर अधिकाधिक संवेद्य और सौन्दर्यमूलक बनाता है।"[4]

III) कैम्पवेल डबलेडी :

"अच्छे टेकनिक का अर्थ है सही बात, सही ढंग से, उपयुक्त समय पर करना वही विषय चुनो जो तुम्हें रूचे और तब ऐसी शैली एवं टेकनीक चुनो जिसके सहारे वह विषय पाठकों तक मार्मिक ढंग से पहुँचाया जा सके।"[5]

IV) डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल -

"जब भाव और अनुभूति की प्रेरणा मनुष्य के मन और मस्तिष्क में घनीभूत होती है, तब वह उसकी अभिव्यक्ति में संलग्न होता है। अभिव्यक्ति के लिए वह कभी वाणी का सहारा लेता है, कभी आकृति का, लेकिन वह अपने आप प्रकाशन में अधिक से अधिक रोचकता, आकर्षण और प्रभविष्णुता लाने के लिए अन्यान्य रूप-विधानों की योजना करता है।"[6]

तात्पर्य -

1. रचना विधि और शिल्प विधि शब्दप्रयोग का साहित्य में समानता से प्रयोग किया जाता है।
2. साहित्यकार अपनी अमूर्त जीवनानुभूतियों को मनःप्रभावों तथा विचारों के साथ भावनाओं को मूर्त रूप देकर अधिकाधिक सौंदर्यमूलक बनाता है।
3. शिल्प के द्वारा साहित्यकार की प्रतिभा सृजनशील कल्पना और साधना का विकास होता है।

5.3 शिल्प : महत्त्व :

शिल्प का महत्त्व साहित्य में अनिवार्य है। शिल्प-विधान लेखक तथा पाठक के बीच अनुभूति और अभिव्यक्ति का साधन है। शिल्प के आधार पर ही साहित्यकार के साहित्य का मूल्यांकन, अनुशीलन किया जाता है और साहित्यकार के साहित्य की सफलता तथा असफलता को परखा जाता है। शिल्प साहित्य की अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा आंतरिक प्रक्रिया है। "जब तक साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति की अनिवार्यता बनी रहेगी, तब तक माध्यम से अभिव्यक्ति के प्रकार के रूप में शिल्प का महत्त्व बना रहेगा।"[7] इस तरह शिल्प साहित्य का

महत्त्वपूर्ण अंग है तथा शिल्प के तत्व-कथानक, पात्र-चरित्र-चित्रण, संवाद, उद्देश, देशकाल वातावरण, शीर्षक आदि साहित्य के प्राण है जिसकी प्रतिभा से साहित्य उभरता है। एक रचनाकार की प्रतिभा दूसरे रचनाकार की प्रतिभा से अलग होती है। इसलिए उनके साहित्य के शिल्प में भी भिन्नता दिखाई देती है। परिणामतः पाठक प्रबंधकाव्य, महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक काव्य, गीतिकाव्य, आख्यान, नाटक, एकांकी, कहानी आदि के भेद को समझ पाता है। इसतरह साहित्य के प्रकार शिल्प के आधार पर देखे व समझे जाते हैं। पाठक शिल्प की अभिरूचि के अनुसार साहित्य विधा का चयन करते हुए शिल्पगत विशेषताओं के आधार पर साहित्य का अध्ययन करता है।

तात्पर्य -

1. साहित्य में शिल्प विधि अनिवार्य होती है लेकिन शिल्प का आग्रह तथा दूराग्रह साहित्यकार को असफलता केओर ले जाता है।
2. शिल्प के कारण अलग-अलग विधाओं का अंतर समझ में आता हैं। अतः पाठक अपनी अभिरूचि के अनुसार साहित्य विधा का चयन करता है।
3. शिल्पगत विशेषताओं के कारण साहित्यकार की प्रतिभा का ज्ञान होता है।

निष्कर्ष -

'टेकनिक' या शिल्प विधी के द्वारा साहित्यकार अपने लक्ष्य की पूर्ति करता है। साहित्य में शिल्प का आग्रह उस सीमा तक आवश्यक है जहाँ तक वर्ण्य विषय के औचित्य को हानी नहीं पहुँचती है। अर्थात एक सफल साहित्यकार वर्ण्य विषय के प्रति पूर्ण न्याय करते हुए जब कृति को सुंदर शिल्प देता है, तभी वह कृति श्रेष्ठ होती है।

5.4 साधुराम दर्शक की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ :

साधुराम दर्शक समाज का यथार्थ दर्शन कराने वाले, समाज के उपेक्षित व्यक्तियों को नज़दीक से देखनेवाले, समझनेवाले तथा उनकी रोजमर्रा की जिंदगी को अपनी कहानियों में उजागर करनेवाले कहानीकार हैं। यद्यपि उनकी

कहानियों में निम्नमध्य तथा निम्न वर्ग की अनेकविध विशेषताओं की झाँकी मिलती हैं तथापि उनका मुख्य उद्देश्य निम्न वर्ग से जुड़ी हुई समस्याओं को उजागर करना हैं। साधुराम दर्शक अपनी कहानियों के बारे में लिखते हैं - ''मैं कला, कला के लिए' के सिध्दान्त के पक्ष में नहीं हूँ। मेरा मानना है कि कला को मानव और समाज को ऊपर उठाने, उन्नत करने के काम में सहायक होना चाहिए और मैं अपनी रचनाओं में यही सब करता हूँ और करता रहूँगा।''[8]

तात्पर्य - साधुराम दर्शक मानवतावादी लेखक हैं। मानवता की झलक उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में शिल्प के महत्त्व को एक सीमा तक स्वीकारा है।

साधुराम दर्शक जी का बचपन अत्यंत पिछड़े गाँव में बीता। परिणामस्वरूप गाँव में घटित जोर-जुल्म की घटनाएँ, जमींनदारी आदि का प्रतिकार करने के लिए उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से उन्हीं घटनाओं का विरोध किया अतः उनकी कहानियों का अध्ययन करते समय कहानियों के प्रमुख तत्त्वों के संदर्भ में विचार-विमर्श करना आवश्यक रहेगा। कहानी तत्त्वों के संदर्भ में विद्वानों के विविध मत दिखाई देते हैं। कथावस्तु,पात्र तथा चरित्र-चित्रण कथोपकथन, देशकाल-वातावरण, भाषा शैली और उद्देश्य इन्हीं आधारों पर हम साधुराम दर्शक की कहानियों के शिल्प पर विचार करने का प्रयास करेंगे।

5.4.1 कथावस्तु : शिल्प :

कथावस्तु कहानी का प्रमुख तत्व है। कथावस्तु के द्वारा घटनाओं का सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें कारण और उससे उत्पन्न परिणाम पर विशेष जोर दिया जाता है। कहानी का रूप कथावस्तु में पूर्णतः सुरक्षित रहता है, तत्कालिन परिस्थिति का चित्रण उसमें आता है। कथावस्तु पर ही कहानी का ढाँचा तैयार होता है। डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल कहते हैं - ''कथावस्तु का जन्म कहानीकार की उन अनुभूतियों और लक्ष्यात्मक प्रवृत्ति से होता है जिसके धरातल पर अथवा मूल प्रेरणा से कहानीकार अपनी कहानियों का निर्माण करने बैठता है।''[9] इस तरह कथावस्तु साहित्यकार के मन की वह घटना है,

जिससे कथा तथा कहानी का निर्माण होता है, जिसमें रोचकता, आकर्षण और प्रभाविष्णुता का सहारा लिया जाता है। कहानी के कथा साहित्य में जिन घटनाओं का समावेश होता है, उनमें तारतम्य होना चाहिए। सभी घटनाएँ श्रृंखला बद्ध होनी चाहिए। वस्तु-विन्यास की दृष्टि से कथानक के तीन अंग माने जाते हैं। आरम्भ, मध्य और अन्त ।

इस दृष्टि से विचार करने पर साधुराम दर्शक की 'कहानियाँ' शिल्प विधि का पूर्णतः निर्वाह करती है। उनकी कहानियाँ सीधी-सपाट भाषा और उँचे उद्देश्यों को प्रकट करती हैं। इन कहानियों में आशा है, विश्वास है, यथार्थ है। कई कहानियों में तो लेखक स्वयं हालात और समाज से जूझता हुआ प्रतीत होता है।

'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' कहानी संग्रह की कहानियाँ प्रेमचंद की परंपरा का निर्वाह करती दिखाई देती है। 'डायरी के कुछ पन्ने' कहानी में सामाजिक तथा पारिवारिक चिन्ताओं को लेकर अपने अर्न्तमन से जूझते एक व्यक्ति का दुखद अंत इस कामना में होता है कि उसके परिवार का भविष्य सुखद हो। 'लगे रहिए मंगतराम जी ' कहानी दिल्ली के मध्यमवर्गीय व्यक्ति का आज का सत्य उद्घाटित करती है। 'अतीत' कहानी भारत-पाक विभाजन के समय की यादों का प्रतिबिम्ब है। 'ड़ायन' कहानी ग्रामीण परिवेश को लेकर लिखी गई है। इसमें मासूम विधवाओं की बलि देनेवाली परंपरा के विरूध्द विद्रोह झलकता है। 'जिन्दा-मुर्दा' कहानी साम्प्रदायिक घटनाओं के परिणामों पर प्रकाश डालती है। 'पिशाच्च-लीला' कहानी में जातीयता के नाम पर कुकृत्य करनेवाले समाज के उच्चवर्गीय लोगों की मनोवृत्ति का चित्रण किया है। 'कुत्ता-जिन्दगी' कहानी बेकारी-बेरोजगारी से त्रस्त आज की युवा पीढ़ी की दयनीयता को तथा बिना किसी कसूर के घर परिवार की दृष्टि से हीन से हीनतर होते जा रहे हैं इसका यथार्थ चित्रण करती है। 'शाही-खेल' कहानी राजनेताओं, प्रशासनतंत्र और समाज-विरोधी, तत्त्वों की मिली-भगत का बेवाक चित्रण करती है। 'पंछी-बाबा' कहानी में जातीयता के नाम पर महान व्यक्तियों की हत्या का चित्रण हुआ है। 'एक वीतरागी के नोट्स' कहानी सामान्य परिवार के सदस्यों की आर्थिक कठिनाईयों के कारण बदलती मानसिकता का चित्रण करती है। 'साँपन' कहानी में माँ की विवशता का चित्रण

किया है। 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार' कहानी विशेष रूप से प्रतीकात्मक है। नन्हा गुलाब विकासमान नवजात का और बूढ़ा खार अनुभवनिष्ठ उत्तरदायी बुजुर्ग पीढ़ी का प्रतिनिधि है। साम्प्रदायिक घृणा के मुकाबले साम्प्रदायिक सद्भाव और समन्वय सकारात्मक और सार्थक होता है। 'एक पोटली अनाज' कहानी शोषण की समस्या को उद्घाटित करती है। 'विड़म्बना' कहानी आज के युवा पीढ़ी की बदलती मानसिकता का चित्रण करती है। 'मनहूस' कहानी समाज के उपेक्षित व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिकता के साथ समाज में फैली अंधःश्रद्धा को उद्घाटित करती है। 'कंकाल हंसता है' कहानी में जातीय विद्वेष की समस्या वर्णित है। 'पर कटी तितली' कहानी में परिवार में स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय अत्याचार का उद्घाटन हुआ है। नारी जीवन की त्रासदी, उनके साथ होनेवाले क्रूर अमानवीय व्यवहार और हत्याओं का सूक्ष्म अंकन किया हैं।

साधुराम दर्शक जी की अधिकांश कहानियों का आरंभ आश्चर्य सस्पेन्स तथा चित्रविधात्मक पध्दति से हुआ है। प्रत्येक कहानी मुख्य घटना से संबंधित सूक्ष्मतम जानकारी देकर जन-भावना का जीता-जागता चित्र प्रस्तुत करती है तथा समाज में फैला दुख व दारिद्रय, हिंसा, लूट-खसोट के लिए जिम्मेदार चंद स्वार्थांध तत्व आदि के विरूध्द संघर्ष करने के लिए समाज को प्रेरित करती है।

साधुराम दर्शक की पहचान जन-हित के प्रति उनकी प्रतिबध्दता है। 'एक और सावित्री'कहानी संग्रह की कहानियाँ सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण करती है, साथ ही सामाजिक जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा इन कहानियों में मिलती है - 'एक और सावित्री' कहानी एक ऐसे श्रमजीवी नारी पात्र की दिनचर्या पर फोकस ड़ालती है, जो जी तोड़, अथक परिश्रम करते-करते शारीरिक रूप से हार जाने के पश्चात् भी मन से नहीं हारती क्योंकि ''इज्जत बेचने से परिश्रम बेचना अच्छा है।''[10] इससे यह स्पष्ट होता है कि कहानियों का मध्य भाग घटनाओं और पात्रों के विकास की दृष्टि से अत्यंत प्रभावोत्पादक बना है। 'माँ के आँसू' कहानी माँ के प्रति बेटे के प्रेम को 'उर्फ भैंसा या...' कहानी एक उपेक्षित इंसान के बलिदान को पतिता 'चन्द्रकिरण' कहानी आँखें खोलने वाले आदर्श को 'उपहार' कहानी हँसते-खेलते परिवार का एंव भाई-बहन के प्रेम आदि को उद्घाटित करती

है। 'बाबा बरगद' प्रतिकात्मक कहानी है। 'नये युग की यक्षिणी' कहानी आधुनिक युग की युवतियों की महत्त्वकांक्षाओं, इच्छाओं पर फोकस डालती है। 'उदास पीला गुलाब' कहानी में शादी के नाम पर ठगे गये युवती का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। 'बचूड़खाना' कहानी में बूढ़ों-बूजुर्गों की समस्या का उद्घाटन हुआ है। 'क्रोध' विकृत मनोवृत्ति के इंसान की कहानी है, जो समाचार पत्र की हिंसात्मक घटनाएँ पढ़कर क्रोधित होता है और अपना गुस्सा दूसरों पर उतारता हैं। 'बला' कहानी में 'शराब' के कारण परिवार का विध्वंसक रूप का उद्घाटन हुआ है। 'जिप्सी की तलाश' प्रेम, अपनापन आदि से वंचित पिता की कहानी है। 'जागो' बेरोजगार युवक की दयनीयावस्था की कहानी है। 'खलनायक' कहानी मानवीयता को उद्घाटित करती है। इस तरह प्रस्तुत कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ यथार्थ का चित्रण करती हुई बोधगम्य सहज सरल शैली में मानव जीवन के पोषक तत्त्वों का घातक तत्त्वों से संघर्ष दिखाती है।

'धारा बहती रही' कहानी संग्रह की कहानियाँ पीड़ितों और शोषितों से प्रतिबद्धता में जुल्मियों के खिलाफ संघर्ष के सांस्कृतिक हथियार के रूप में रची गयी है। 'धारा बहती रही', 'पतिता', 'तेल का कनस्तर', 'शिव', 'मनहूस', 'ट्राई साईकिल' आदि कहानियों में जीवन के प्रति आस्था, जीवन से आन्तरिक प्यार, धर्म निरपेक्ष मानवतावादी व्यवहार, जीवन को बेहतर बनाने के लिए संघर्ष से प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति हुई हैं। 'धारा बहती रही' की युवती कहती है कि - "जीवन से बढ़कर इस दुनिया में कोई चीज नहीं है"[11] और यही एहसास घोर निराशा के क्षण में जीवन की रक्षा करने की शक्ति देता है। 'अगले अप्रैल में' तथा 'खुशी भरा दिन !' आदि कहानियाँ बेकारी से त्रस्त युवकों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करती है। 'दीवारों बोलती है' तथा 'कंकाल' आदि कहानियों में दारिद्रय, दयनियावस्था उद्घाटित करती है। 'कुटिलजी की देशसेवा' कहानी में दुमुहँ, स्वार्थी मंत्रियों के कुकृत्यों का चित्रण किया है।

तात्पर्य -

1. कथावस्तु और संकेत की दृष्टि से प्रस्तुत कहानियाँ नये सामाजिक यथार्थ

को व्यक्त करती है।

2. समाज में घटित घटनाओं को कहानियों में मार्मिक तथा संवेदनशीलता से चित्रित किया गया है।

3. कहानियों का अंत पाठकों को अंतर्मुख होकर सोचने के लिए मजबूर करता है।

4. ज्यादातर कहानियाँ 'मैं' इस उच्चतम शैली में लिखी गई हैं।

5. निम्नवर्गीय समाज का चित्रण अधिक हुआ है।

6. जन सामान्य लोगों के जीवन से संबंधित 'कथ्य' होने के कारण पात्र एवं घटनाएँ उनसे संबंधित ही हैं।

7. कुछ कहानियों का कला पक्ष कमजोर है।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत कहानियों के कथावस्तु का अध्ययन करने के पश्चात् सार रूप में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानियाँ प्रेमचंद की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परंपरा को आगे ले जाने वाली है। इसमें जन-सामान्य लोगों की अंर्तमन में व्याप्त पीड़ा का मर्मान्तक चित्रण बारीकी से किया गया है। अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण परिवेश के साथ महानगरीय जीवन का भी चित्रण करती हैं। साधुराम दर्शक ने मानवीय संवेदनाओं के साथ जीवन की सभी समस्याओं का उद्घाटन बखूबी से किया है। उनके कहानियों के पात्र जीने की तमन्ना रखते हैं। यही आशावाद मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ 'धारा बहती रही', 'एक और सावित्री' आदि कहानियों में व्यक्त हुआ हैं। उनकी कहानियाँ कला पक्ष की दृष्टि से कमजोर होते हुए भी पाठक के मन को छू जाती हैं।

साधुराम दर्शक की कहानियों में जीवन विविध रूपों में दिखाई देता है। दर्द, आक्रोश, जब्त, चापलूसी, झूठ, फरेब, षडयंत्र, हत्या, अंधविश्वास, चेतना, ग्लानि आदि की स्थितियाँ ही नहीं प्रतिरोध और निश्चयमूलक स्थितियाँ भी हैं। दया, करूणा और प्रेम के भाव भी अभिव्यक्त हुए हैं।

सारांशतः साधुराम दर्शक की कहानियाँ कथावस्तु की दृष्टि से सफल हैं।

5.4.2 चरित्र-चित्रण : शिल्प :

आधुनिक कहानी का आधार मनोवैज्ञानिक है और मनोविज्ञान का मूल केंद्र 'चरित्र' है। परिणामतः कथावस्तु चरित्रों के कारण सजीव बनता है। अतः हिंदी कहानियों में चरित्र-चित्रण का महत्त्व सर्वाधिक है। 'कहानी के चरित्रों के स्वाभाविक विकास के लिए स्वाभाविकता, सजीवता अथवा व्यक्तित्व-संपन्नता कहानी के मूल भाव के प्रति अनुकूल को अनेक विद्वानों ने आवश्यक माना है।"[12] अर्थात् कहानियों के पात्रों के व्यक्तित्व भाव और संघर्ष तथा व्यक्तित्व संपन्न होने चाहिए। लेखक अपनी इच्छा के अनुसार जब पात्रों की निर्मिती करता है और वही पात्र पाठकों के मन में अपेक्षित भाव पैदा करके स्थायी रूप में अपना प्रभाव डालते है तभी सफल चरित्र-चित्रण बन सकते हैं।

साधुराम दर्शक जी के कहानियों के पात्र ग्रामीण तथा महानगरीय परिवेश के है। समाज के निम्नवर्गीय पात्रों का चित्रण कहानियों में खुलकर हुआ है। अधिकांश उनके पात्र संवाद नहीं करते बल्कि लेखक उनका परिचय सांकेतिक शैली में देता है। 'केवल गोस्वामी' उनके पात्रों के बारे में कहते है - "दर्शक जी की अधिकांश कहानियों के केन्द्रीय पात्र प्रायः उपेक्षित, गरीब, किन्तु जीवन की कठोर परिस्थितियों से जूझते इन्सान है, जिनके भीतर वर्तमान दुनिया को एक बेहतर दुनिया बनाने का सपना पूरी ताकद के साथ उभर आता है।"[13] अर्थात साधुराम दर्शक की कहानियों के पात्र निम्नवर्गीय समाज की देन हैं।

'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' कहानीसंग्रह की कहानियों के पात्र जैसे 'डायरी के कुछ पन्ने', 'अतीत', 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'जिन्दा-मुर्दा', 'पिशाच्च लीला', 'कुत्ता-जिंदगी', 'एक पोटली अनाज', 'सांपन', 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार' आदि कोई प्रतीक नहीं बल्कि केंद्रिय पात्र हैं।

'एक और सावित्री' कहानी संग्रह के पात्र गरीब है, लेकिन स्वाभिमानी और दूसरों के प्रति आदर, प्रेम, अपनापन, तथा मानवता के प्रति सजग

है। 'एक और सावित्री', 'माँ के आँसू', 'उर्फ भैंसा या....?', 'पतिता', 'बाबा-बरगद', 'नये युग की यक्षिणी', 'खलनायक', 'चन्द्रकिरण' आदि कहानियाँ इसमें आती हैं। 'चन्द्रकिरण' कहानी की नायिका चन्द्र अशिक्षित होकर भी अपनी दुर्दशा एवं समस्याओं के तह में जाकर उसे दूर करने के लिए प्रयत्नशील है एवं पाठकों के मन में आशावाद जगाती है।

'धारा बहती रही' कहानी संग्रह के पात्रों में नारी पात्रों का चरित्र चित्रण उनके व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ भाव, संघर्ष तथा अस्मिता के प्रश्नों के द्वारा किया है। कहानी को आगे बढ़ाने का काम पात्र करते हैं। अत एव उनके चरित्र विकास में सहजता, स्वाभाविकता के साथ असम्बद्धता भी दृष्टिगोचर होती है। उनकी अपनी पीड़ा, द्वंद्व, संघर्ष तथा निजता आदि के बोध की अभिव्यक्ति इनके साथ-साथ समस्त नारी जाति के चरित्र की प्रतिनिधि बन जाती है। इसमें 'कुसुम', 'नंदा', 'संगीता', 'ज्योति', 'चन्द्र', 'कम्मों', 'सुधा', 'रामकली', 'नीलू' आदि नारी पात्र आते हैं।

विवेच्य कहानियों में समाज के उपेक्षितों की बेबसी, विवशता आदि का अंकन 'भैंसा' (रामस्वरूप), मनहूस, बिरजू-चम्पा, पतिता, आदि पात्रों के माध्यम से किया हैं। साधुराम दर्शक की कहानियों में निम्नवर्गीय पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वाभाविकता से तथा सजीवता के साथ हुआ है।

तात्पर्य –

1. साधुराम दर्शक जी के कहानियों के पात्र समाज के उपेक्षित इंसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
2. लेखक हमें जिन पात्रों से परिचित कराना चाहते हैं वे ज्यादातर निम्न वर्ग के पात्र हैं। जो उच्चवर्ग से शोषित तथा पीड़ित है।
3. लेखक ने नारी पात्रों को अपनी तरह विद्रोही बनाने की कोशिश की है, लेकिन कई नारी पात्र समाज के बनाये रीति-नियमों के अनुसार अन्याय-अत्याचार को सहते हुए मानसिक संतुलन खोकर अपना जीवन व्यतित करते है तो कहीं अपने प्राणों की आहुती देते है।

निष्कर्ष -

साधुराम दर्शक जी की कहानियों के पात्रों के बारे में निष्कर्षतः यही कहा जा सकता हैं कि उनके पात्र समाज में वास्तव करनेवाले यथार्थ पात्र हैं न कि कल्पना के माध्यम से बनाये गये हैं। निम्नवर्गीय पात्रों का ज्यादातर विवेचन मिलता है। जो अपने जीवन से संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। कई पात्रों के चरित्रों में लेखक का अपना व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता है और चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन 'मैं' शैली में किया गया है।

प्रस्तुत कहानियों के पुरूष पात्र तथा नारी पात्र उच्चवर्गीय लोगों से शोषित है, तो कहीं उनका शोषण के प्रति विद्रोह फूट पड़ता है। आर्थिक समस्या के कारण कई समस्याओं से घिरे हुए ये पात्र दिखाई देते हैं फिर भी अपनापन, प्रेम के भूखे हैं तो कहीं अपने स्वार्थ के लिए निक्कमेंपन की हद तक जा पहुँचते हैं।

साधुराम दर्शक जी ने ग्रामीण परिवेश के साथ-साथ नगर में संघर्षों से जूझते पात्रों को कथा-नायक बनाया है। इसलिए उनकी कहानियाँ सबल तथा समस्यापरक है।

5.4.3संवाद : शिल्प :

पात्र तथा चरित्र आपस में वार्तालाप करते हैं, उन्हें ही संवाद कहा जाता है। कहानी में संवादों के प्रमुखतम तीन कार्य है -

1. कथानक को गतिशील बनाना।
2. पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट करना।
3. लेखक या कहानीकार के उद्‌देश्य को साकार करना।

अतः संवाद कथावस्तु के स्वाभाविक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसलिए कहानी शिल्प के तत्त्वों में संवादों का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। उनके माध्यम से ही लेखक ज्ञान, विचार, अनुभव, निरीक्षण शक्ति का परिचय देते है। इस संदर्भ में जगन्नाथ प्रसाद शर्मा के विचार महत्त्वपूर्ण हैं - "यदि देश-काल और संस्कृति विशेष का कोई प्राणी किसी से भी किसी प्रकार की बातचीत करता है, तो उसकी

बातचीत की प्रांजलता और विदग्धता, शब्द और वाक्य के प्रयोग, भाषा और पदावली से हमें प्रत्यक्ष मालूम होता है कि व्यक्ति किस कोटि, वर्ग, देश और काल का है।''[14]

साधुराम दर्शक जी की कहानियों के पात्रों के संवाद अधिकांश संक्षिप्त, स्वाभाविक, अनुकूल, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक उद्‌देश्य पूर्ण तथा नाटकीय प्रयुक्त होते हैं। कहानियों के संवादों की यह विशेषता है कि पात्र स्वयं अपने या दूसरों के बारे में कम बोलते है लेखक द्‌वारा वर्णित उनकी भावभंगिमा, क्रियाशीलता परिवेश ही उनके चरित्रों का उद्‌घाटन सफलता से करते हैं।

'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' कहानी संग्रह की - 'डायरी के कुछ पन्ने', 'पिशाच्च लीला', 'डायन', 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'पंछी बाबा', 'एक वीतरागी के नोटस' आदि कहानियों में पात्रों के संवाद बहुत कम दिखाई देते हैं। 'एक और सावित्री' कहानी संग्रह तथा 'धारा बहती रही' कहानी संग्रह की कहानियों की यह विशेषता है कि वे अपनी समस्याग्रस्त स्थिति का अंकन संवादों के माध्यम से करते हैं। उदाहरणार्थ - 'धारा बहती रही' कहानी के युवक-युवती का संवाद जो अपनी-अपनी समस्याओं से ग्रस्त है तथा आत्महत्त्या करने नदी के किनारे आये हैं।

''तो फिर आप क्यों कर रही है आत्महत्त्या?''

''क्योंकि मेरे लिए और कोई चारा नहीं है।''

''सभी आत्महत्त्या करने वाले यही कहते हैं।''

''नहीं। जिन्दा रहने के लिए यदि जरा-सा भी उपाय होता, तो मैं कभी यह कदम न उठाती। जीवन से बहुत प्यार है मुझे।''

''ठीक है। तब एक बात हो सकती है, '' कुछ देर सोचने के बाद युवक बोला। ''आप सारी जिम्मेदारी मुझ पर डाल सकती हैं।''

''जी नहीं, ध्यन्यवाद। बाद में ताने दे-दे कर आप उमर भर मेरी जिन्दगी नरक बनाते रहेंगे।''[15]

तात्पर्य -

1. साधुराम दर्शक जी के कहानियों के पात्रों के संवाद अर्थगर्भित संक्षिप्त होने से उत्कृष्ट हैं।
2. कहानियों के कथा विकास में गतिशीलता लाने का कार्य संवाद करते हैं तथा कहीं-कहीं संवाद नाटकीय बने हैं।
3. संवादों के माध्यम से उपेक्षित पात्रों का मनोवैज्ञानिकता का चित्रण हुआ है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि साधुराम दर्शक जी की कहानियों के पात्र हिमाचल प्रदेश के तथा ग्रामीण परिवेश से लेकर महानगरीय परिवेश के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। छोटे-छोटे संवादों में ही जीवन का मार्मिक अर्थ तथा अनेक पहलू उजागर हुए हैं। समाज के निम्नवर्गीय तथा उपेक्षित पात्र अपने संवादों के माध्यम से अपनी वेदनाओं को पाठक के सामने रखते हैं। संवाद संक्षिप्त, अर्थगर्भित है, लेकिन कहानीकार ने कहानियों में पात्रों के संवादों से अधिक अपने विचारों को सामने रखकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करने का प्रयास किया है। कहानी के छोटे-छोटे संवाद कथावस्तु के विकास तथा चारित्रिक उद्घाटन में बड़े सफल हुए है। उनके वाक्यों की संक्षिप्तता, सांकेतिकता और प्रवाहमयता से उनके संवाद प्रभावोत्पादक बनें हैं।

5.4.4 देशकाल, वातावरण : शिल्प :

देशकाल-वातावरण कहानी का आवश्यक तत्त्व है। घटनाओं पात्रों और उनके कार्यकलापों को विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने का कार्य देशकाल-वातावरण करता है। ‘‘वर्ण्य व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-नीति, भाषा और उसके आसपास घिरी परिस्थितियाँ ही देश-काल और वातावरण की संज्ञा धारण करती है।’’[16] तात्पर्य देश-काल वातावरण घटनाएँ, कथावस्तु एवं पात्र इन का ठोस आधार होता है।

साधुराम दर्शक जी ने अपनी कहानियों में हिमाचल प्रदेश के आसपास के गाँवों को तथा दिल्ली जैसे महानगरों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। हिमाचल प्रदेश से लेकर दिल्ली तक के जन-जीवन, जन-संघर्ष, बोली-बानी, परिवेश, रीति-रिवाज, संस्कृति, शोषक-शोषित आदि का विस्तृत विवेचन अपनी कहानियों में बड़ी प्रगल्भता एवं प्रवणता के साथ किया है। इस संदर्भ में मोहन साहिल लिखते हैं - ''संग्रह में जो कहानियाँ ग्रामीण परिवेश को लेकर लिखी गई हैं वे मात्र फैशन के तौर पर गाँवों के जन जीवन व रीतियों-रिवाजों का वर्णन नहीं करती बल्कि वे ग्रामीण वास्तविकता के बहुत करीब हैं। महानगर में रहने के बावजूद लेखक अपने ग्रामीण लहजे को नहीं छोड़ पाया है। हिमाचल और पंजाब की सीमा के गांवों के कई शब्द जैसे बासा, कहे-कहियाँ वीरजी, कुड़ी आदि का लेखक ने खुलकर प्रयोग में लाया है जिससे हिंदी शब्दकोष समृध्द ही हुआ है तथा ये शब्द यहाँ की मिट्टी की सुगन्ध बिखरते हैं।''[17] अर्थात लेखक ने अपनी दृष्टि से ग्रामीण तथा महानगरीय परिवेश का चित्रण स्वाभाविकता के साथ यथार्थता से किया हैं। 'कंकाल हंसता है' कहानी में उनकी निरीक्षण शक्ति का निम्नलिखित उदाहरण समीचीन होगा। यथा -

''....अचानक जून के आकाश में छाये झीने सफेद बादलों की परत को चीर कर कृष्ण पक्ष के चाँद की अधूरी थाली चमक उठी। धर्मसिंह राणा की आँखों के सामने अद्‌भुत नजारा छा गया चारों तरफ दूर-दूर तक फैले उनके खेतों में से अधिकतर गेहूँ काटने के बाद खाली पड़े थे और ताजा जुते और सुहागा किये हुए थे। बीच-बीच में किसी खेत में सब्जी, किसी में हरा चारा और किसी में गन्ना उगा हुआ था। धर्मसिंह राणा को लगा जैसे बहुत बड़ी सुनहरी चादर पर किसी ने गहरे हरे रंग से अनेकों वर्गाकार या आयताकार छापे छाप दिये हैं।''[18]

महानगरीय परिवेश को लेकर लेखक ने कई कहानियाँ लिखी। महानगरीय जीवन समस्याओं से भरा होता है उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या आवास की समस्या होती है। इसी समस्या को लेखक ने 'लगे रहिए मंगतराम जी' कहानी में प्रस्तुत कि या है - उदाहरणार्थ - मंगतराम जी जब पहले पहल शहर में जाता हैं तो उसका अनुभव यहाँ पर प्रस्तुत हैं -

''नया कमरा ढूंढने के लिए बहुत भाग-दौड़ करनी पड़ी थी। अजीब-अजीब बातें सुनने को मिली थी : ''...अविवाहितों को कमरा किराये पर नहीं देते''... ''दो साल का किराया पेशगी लेंगे''.... ''कमरे में थोड़ा सामान भी रहेगा''... ''चूल्हा और अंगीठी नहीं जला सकते, दीवारें और छतें काली हो जाती हैं'' ''सार्वजनिक शौचालय इस्तेमाल करना होगा और पानी भी गली के नल से लाना होगा''.. ''परिवार तो बहुत बड़ा नहीं है''... ''गेस्ट ज्यादा नहीं आने चाहिए''.... ''रात को देर से नहीं आ सकते''... 'अमुक-अमुक चीज नहीं प्रयोग कर सकते''... ''हमारे बच्चों को भी पढ़ाना होगा''... आदि।[19]

तात्पर्य -

1. लेखक ने अपनी कहानियों में वातावरण का बिम्ब समग्रता के साथ एक परिपूर्ण चित्र के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है।
2. ग्रामीण तथा महानगरीय परिवेश का यथार्थ चित्रण उनकी कहानियों में मिलता हैं।

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः यह कह सकते है कि साधुराम दर्शक ग्रामीण तथा महानगरीय जीवन से पूर्णतः जूड़े हुए हैं इसलिए उन्होंने अपनी कहानियों में ग्रामीण तथा महानगरीय जीवन का यथार्थता के साथ चित्रण किया है।

5.4.5 उद्देश्य : शिल्प :

लेखक जीवन के जिस लक्ष्य को आदर्शों को कहानी के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत करता है, उसे उद्देश्य कहा जाता है। 'उद्देश' कहानी का आत्मा है। साधुराम दर्शक की विवेच्य कहानियाँ नारी-जीवन के यथार्थ को तथा निम्नवर्गीय समस्याओं को प्रस्तुत करती है। उनके कहानियों में उद्देश्य की प्रधानता का अधिक्य है। अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लेखक कहते है - ''मॅट्रिक पास करने के बाद गांव से बाहर निकला, तो देखा कि भूख, गरीबी, अंधविश्वास और जोर-जुल्म केवल हमारे गांव की ही बपौती नहीं बल्कि सारे देश

में व्याप्त है। 'प्रभाकर' में पढ़ने के कारण साहित्य के विषय में भी जो कुछ ज्ञान हो गया था। अतः प्रतिकार की जो भावना दिमाग में उठतीं, वे कागज के पन्नों पर उतरने लगीं।... मेरे कमजोर हाथों में हथियार आ गया।''[20] तात्पर्य उनकी कहानियाँ यथार्थ घटनाओं से संबंध रखती न कि सूनी-सुनाई । लेखक एक ऐसा भारत बनाना चाहते हैं जहाँ मानव और मानवीयता हो न कि भूख, बीमारी, अनपढ़ता, भयंकर युद्ध, अंधविश्वास, भेद-भाव आदि बल्कि सब लोग खुशी-खुशी स्वतंत्रता और स्वाभिमान पूर्वक रह सके। अर्थात कहानियों का मुख्य उद्देश्य है -

1. जन सामानयों की पीड़ा तथा समस्या का उद्घाटन।
2. मानव तथा मानवीयता में अटूट विश्वास होने के नाते 'वसुधा कुटुबंकम्' की भावना का समाज में प्रचार-प्रसार करना।

5.4.6 भाषा : शिल्प :

भाषा को मनोभावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का साधन माना जाता है। शैली के माध्यम से उसका उपयोग साहित्य में किया जाता है। भाषागत सौंदर्य के अंतर्गत कहानीकार की शब्द योजना, पद योजना तथा वाक्य विन्यास, प्रसंगों, कहावतो, मुहावरों, अलंकारो आदि का समावेश होता है। पाश्चात्य साहित्यकार 'पो कॉक' के अनुसार ''कहानी का प्रत्येक भाग, प्रसंगानुकूल होना चाहिए। न तो उसमें भावों की दुरूहता ही हो और न शब्दाडम्बर ही हो। प्रत्येक शब्द, शब्द समूह और वाक्य का कथा के वस्तु-पात्र या वातावरण से सम्बधित होना आवश्यक है, जिससे कहानी पढ़ने के पश्चात् हमें ऐसा प्रतीत हो कि यदि हम कहीं एक भी पंक्ति छोड़ जाते, तो कहानी ही अपूर्ण रह जाती।''[21]

साधुराम दर्शक जी मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित रहे इसलिए उनकी कहानियों के पात्र अन्याय-अत्याचारों से जूझते नजर आते है। अधिकांश कहानियों के पात्र सामान्य तथा उपेक्षित लोग हैं। घटनाएँ भी मुख्यतः रोजमर्रा की जिंदगी की ही हैं। उनमें मानव-मूल्यों को खोजते, जांचते-परखते तथा कुशलता से उभरते हुए चित्रित किया है। स्वयं हिमाचल प्रदेश के रहने वाले हैं। फलतः उनकी

भाषा में कभी-कभी उस क्षेत्र की बोली-बानी का, मुहावरों का सहज मिठास भरा पुट मिल जाता है, उनकी रचनाओं में वहाँ की प्राकृतिक छटाएँ और उसमें रचे-बसे जीवन का चित्रण मिलता ही है। उदाहरण के लिए 'कंकाल हँसता हैं', 'धारा बहती रही', 'ड़ायन', 'पिशाच्च लीला', 'पर कटी तितली', 'एक पोटली अनाज' आदि कहानियाँ में।

साधुराम दर्शक जी की कहानियों में परिवेश एवं क्षेत्रियता वैविध्यता होने के कारण कई बोली भाषाओं के शब्द मिलते हैं। वे निम्नलिखित है -

I. संस्कृत शब्दों का प्रयोग :

साधुराम दर्शक जी की कहानियों में संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है - स्वप्न लोक[22], ईश्वर[23], भयानक[24], शत्रु[25], ब्राहमणी[26], राम[27], वैज्ञानिक[28], मेजन[29], शाखा[30], हर्ष[31] , शेष[32],चंद्र[33], चरण[34], क्रोध[35] आदि

II. फारसी शब्दों का प्रयोग :

जबर्दस्त[36], तनख्वाह[37], शायद[38], फरिश्ता[39], बीमार[40], शर्म[41], खामोशी[42], खुश[43], खर्च[44], आदि

III. अरबी शब्दों का प्रयोग :

जिम्मेदारी[45], हिज्जे[46], शेखचिल्ली[47], इंतजार[48], दफन[49], दफ्तर[50], दहेज[51], हैवान[52], महसूस[53], तारीख[54] आदि

IV. अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग :

प्लीज[55], पाटी-इंस्पेक्शन[56], एकसीडेंट[57], पार्ट-टाईम[58], डॉक्टर[59],फर्स्ट[60],पॅन्ट[61], मिस्टर[62], स्कूल[63], इंस्पेक्टर[64], मॅट्रिक[65], ऑपरेशन[66] आदि

V. पुनरूक्ति शब्द -

नन्हीं-नन्हीं [67], जैसे-जैसे[68], अपना-अपना[69], कभी-कभी[70], खड़े- खड़े [71], हाँफता-हाँफता[72], चलते-चलते [73] आदि।

यहाँ स्पष्ट होता है कि विवेच्य कहानी संग्रहों में संस्कृत फारसी, अरबी, अंग्रेजी, पुनरूक्ति शब्दों का प्रयोग हुआ हैं, जिससे भाषा में प्रौढत्व, मिठास और प्रभावात्मकता आ गई है।

तात्पर्य –

प्रस्तुत कहानियों में लेखक ने अपने ही ढंग से हमारे मौजूदा समाज में फैली व्याधियों से पीड़ित आम इंसान की पीड़ा, झुँझलाहट और उसके न्यायपूर्ण आक्रोश को समझाने, रेखांकित करने और पाठकों का ध्यान उस ओर आकर्षित करने का प्रयत्न अपनी सहज आम आदमी के संवादों की भाषा के माध्यम से किया है। भाषा की अभिव्यक्ति में सहजता, सरलता, उद्देश्यपूर्णता हैं। कहीं पर भी शब्दाडम्बर, शब्दच्छल, क्लिष्टता नहीं है तो भावों की विचारों की गहरी अनुभूति की मर्मान्तक पीड़ा सरलता से प्रवाहमानता के साथ वर्णित है। पात्रों ने अपने ही परिवेश की बानी का प्रयोग किया है। इस कार्य को संपन्न करने में उन्होंने कभी सहज-साधारण व्यंग्य तो कभी गहरी संवेदनशील और अकृत्रिम विक्षोभ की अभिव्यक्ति करनेवाली भाषाशैली का अनूठा परिचय दिया है।

1. लेखक ने यथार्थ का चित्रण अपनी कहानियों में स्वाभाविक सहज, सरल, चित्रोपम भाषाशैली में किया हैं।
2. भाषा में 'कला, कला के लिए' की निरर्थक पैंतरेबाजी नहीं दिखाई देती, बल्कि मानव हृदय के स्पंदन को अभिव्यक्त करने में भाषा शैली सक्षम सिद्‌ध हुई हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि लेखकीय सृजन कर्म में रत रहने के पश्चात् भी गाँव की बोली का प्रयोग करने से साधुराम दर्शक जी गाँव की बोली से जुडे रहे हैं इसलिए उनकी कहानियों की भाषा सरल है तथा कहानियों के विषय गाँव, नगर, महानगर से संबंधित सामाजिक हैं। अतः जन सामान्य से सम्बन्धित क्षेत्रीय कहानियाँ एक बार पढ़ने पर ही पाठक की समझ में आती हैं। उसे न किसी शब्दकोश की जरूरत होती है न किताब बंद करके सोचना पड़ता है। कुछ

कहानियाँ आज के लिहाज से पुरानी पड़ गई है। परंतु मानवीय मूल्य, पीड़ाएँ तथा उनके अंतर्द्वंद्व वर्तमान मनुष्य का है। इसलिए यह कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। इसमें 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'शाही-खेल', 'चार्ज-शीट', आदि कहानियाँ है। कोई भी लेखक सामाजिक विषमताएँ छोड़कर अपनी आँखें बंद करके अपनी कला में निखार के सपने नहीं देख सकता। अतः साधुराम दर्शक जी ने इस तथ्य को गहराई से आत्मसात किया है।

5.5 शैली : शिल्प :

अभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग 'शैली' कहलाता है। कोई भी साहित्यकार अपनी भावनाओं की, विचारों की अभिव्यक्ति के लिए एक विशिष्ट शैली का प्रयोग करता हैं। अंग्रेजी में इसे 'स्टाईल' कहा जाता है। एक लेखक की शैली दूसरे लेखक की शैली से भिन्न होती है। डॉ.सुभाष दुरूगकर का मत हैं - ''शैली से अभिप्राय उस विशिष्ट एवं वैयक्तिक अभिव्यक्ति विधि से है, जिसके द्वारा हम किसी लेखक को पहचानते हैं।''[74] अर्थात एक लेखक की पहचान उसकी अभिव्यक्ति की शैली हैं।

साधुराम दर्शक की कहानियों में निम्नलिखित शैली का प्रयोग हुआ है -

5.5.1 आत्मकथात्मक शैली :

लेखक 'मैं' इस उत्तम शैली के आधार 'आत्मवर्णन' तथा आत्मचित्रण करता है और कहानी का पात्र 'स्वयं' बनता हैं। इसे ही आत्मकथात्मक शैली कहते हैं। डॉ.प्रताप नारायण टंड़न का मत है - ''उत्तम पुरूष अथवा प्रथम पुरूष की ओर से जो कथा प्रस्तुत की जाती है, उसे हम आत्मकथात्मक शैली के अंतर्गत रखते है। स्थूल रूप से, इस शैली के अंतर्गत प्रायः वे सब कथाएँ एवं व्यंग्य में जिनमें प्रथम पुरूष की ओर से किसी कथा वर्णन हो।''[75]

साधुराम दर्शक जी की कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है, जिनमें कहानी पात्र 'मैं' के रूप में उपस्थित होते है - इसमें

'ड़ायन', 'ताया', 'बचूड़खाना' आदि कहानियाँ आती है। वह के रूप में 'खुशी भरा दिन', 'तेल का कनस्तर' आदि कहानियों में आत्मकथात्क शैली दिखाई देती है।

5.5.2 पत्रात्मक शैली :

पत्रात्मक शैली की तीन प्रणालियाँ मानी जाती हैं - 1.कई पत्रों के माध्यम से कहानी की सृष्टि करना 2.एक पत्र में ही कहानी का उगम, मध्य तथा अंत करना 3. कहानी का आरंभ और विकास भाग पत्र के माध्यम से अभिव्यक्त करना आदि है। साधुराम दर्शक जी 'पतिता', 'समय के चरण', 'खलनायक', 'चन्द्रकिरण' आदि कहानियों में पत्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ हैं। उदाहरण के तौर पर 'समय के चरण' कहानी का उध्दरण निम्न लिखित हैं -

"प्यारे बापू !

मैं जा रही हूं क्यों कि मैं भेड़-बकरी नहीं हूं, जिसे खरीदा बेचा जाय। मैं स्त्री हूं और स्त्री की तरह ही रहना चाहती हूँ। पर बापू, घबराना नहीं तुम्हारी कम्मों कोई ऐसा काम नहीं करेगी, जिससे खानदान की इज्जत को बट्टा लगे। ऐसा काम करने से पहले वह मर जायगी। एक तेज चाकू उसने अपने पास रख लिया है। बापू, कहीं दूर जाकर मैं नौकरी कर लूंगी, पढ़ूँगी और अपनी जिन्दगी को अच्छा बनाने की कोशिश करूंगी। अच्छा प्रणाम! "

आपकी पुत्री,
कम्मो"[76]

5.5.3 दृश्य शैली :

इस शैली में छोटे-छोटे दृश्यों के माध्यम से वातावरण निर्मिती की जाती है। पात्रों की स्मृतिचिंतन या विचारमंथन द्वारा दृश्यशैली का प्रयोग होता है जैसे स्थान, प्रकृति चित्रण आदि के लिए दृश्य शैली का प्रयोग 'जीत-हार', 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'पिशाच्च-लीला' आदि कहानियों का प्राकृतिक चित्रण दृश्य शैली में हुआ है।

5.5.4 स्वप्न शैली :

लेखक अपने पात्रों के स्वप्नदृश्य के माध्यम से सामान्य लोगों की आशा-आकांक्षाएँ, भावनाओं, कुंठाओं पर दृष्टिक्षेप करता है - जैसे 'लगे रहिए मंगतराम जी' कहानी का नायक सपने में ही घर बनाता हैं और सपना तोड़ने पर अपनी पत्नी को डाँटता भी हैं। 'जिन्दा मुर्दा' कहानी में बेटे के भविष्य के बारे में एक पिता सपना देखता है। जो आम सामान्य व्यक्ति की स्वाभाविक वृत्ति होती है जिन्हें वह प्रत्यक्ष में उतारने से पहले सपनों में देखता है। इस शैली का प्रयोग लेखक ने बखूबी से किया है।

5.5.5 पूर्वदीप्ति शैली :

प्रस्तुत शैली को अतीत स्मृति मूलक शैली कहते है पात्र वर्तमान से भूतकाल में पहुँचकर उस समय के परिवेश या स्थितियों के पात्रों के, बारें में सोचते है जिससे पाठक उनके जरिए भूतकाल से परिचित हो जाते हैं। भूतकाल में घटी हुई घटनाओं के प्रति पात्रों की प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति प्रस्तुत शैली में पाई जाती हैं। इसमें 'ड़ायरी के कुछ पन्ने', 'पिशाच्च-लीला' ,'कंकाल हंसता है', 'पर कटी तितली', 'अतीत' आदि कहानियों का समावेश हुआ है।

5.5.6 वर्णनात्मक शैली :

प्रस्तुत शैली की प्रधानता कहानियों में अधिक है। कहानी को वर्णन-कथन के माध्यम से सुगठित करने का प्रयास लेखक करता हैं। इस शैली का प्रयोग लगभग सभी लेखक करते हैं।

'पर कटी तितली' कहानी का वर्णनात्मक उदाहरण दृष्टव्य है - "फरवरी के शुरू का तीसरा प्रहर। आकाश में सफेद बादलों की बहुत ही झीनी परत छायी थी , जिसमें से छनकर आ रही कमजोर धूप चारो ओर फैल रही थी, मानो धरती को पीलिया हो गया हो।"[77]

वर्णनात्मक शैली का प्रयोग आवश्यकता के अनुसार में सभी कहानियों में दिखाई देता हैं।

5.5.7 पात्रहीन शैली :

साधुराम दर्शक ने कुछ कहानियों में पात्रहीन शैली का प्रयोग किया है। इसमें पात्रों के नाम नहीं मिलते बल्कि 'मैं', 'युवक-युवती', 'वह', 'मनहूस' आदि शब्दों का प्रयोग किया हैं। इसमें 'धारा बहती रही', 'एक वीतरागी के नोट्स', 'मनहूस' आदि कहानियाँ समाविष्ट हैं।

तात्पर्य -

समग्र विचार विमर्श के पश्चात् सार रूप में यही कह सकते हैं कि साधुराम दर्शक जी कहानी विधा के शिल्प के प्रति सजग तथा सतर्क रचनाकार हैं, लेकिन लेखक का उद्देश्य शिल्प सौष्ठव की अपेक्षा कथ्य के मूल्य पर कलात्मक संस्कार करने का रहा है ऐसा प्रतीत होता है। संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, पुनरूक्ति आदि शब्दों का प्रयोग लेखक ने प्रस्तुत कहानियों में किया है, जिससे उनकी भाषा में अधिक निखार आया हैं। लेखक का विस्तृत भाषा ज्ञान एवं भाषा की रचनात्मकता का परिचय प्राप्त होता है जिससे शिल्प वैशिष्टयपूर्ण बना है।

शैली के सार्थक प्रयोग से रचनाएँ अधिक समृध्द हुई हैं। इसमें आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, दृश्य शैली, स्वप्न शैली, पूर्वदीप्ति शैली, वर्णनात्मक शैली, पात्रहीन शैली, आदि शैलियों का आवश्यकता के अनुसार सार्थक प्रयोग होने से कहानियाँ अधिक सुंदर बनी हैं। जिसके माध्यम से नारी मन की अभिव्यक्ति और उपेक्षित लोगों का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी हुआ है।

समन्वित निष्कर्ष -

विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्षतः यह कह सकते हैं - शिल्प साहित्य का आधार होता है। शिल्प का प्रयोग करने से भाषा और शास्त्र, इतिहास तथा दर्शन आदि विषयों में भेद दिखाई देता है। भाषा साहित्य की पहचान शिल्प के द्वारा होती है। शिल्प अंग्रेजी के 'टेकनीक' शब्द का हिंदी रूप हैं।

विवेच्य कहानियों का कथावस्तु-शिल्प मानव जीवन को

व्याख्यायित करते हुए विभिन्न पक्षों का चित्रण सक्षमता से तथा यथार्थता से करता है। निम्नवर्गीय समाज का चित्रण विविध कोनों से करने का सफल प्रयास लेखक ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। प्रस्तुत कहानियों के पात्र सजीव, सप्राण एवं सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाले उपेक्षित लोग हैं। विशेष रूप से लेखक ने नारी पात्रों को अपनी ओर से विद्रोही बनाने की कोशिश की है फिर भी कई नारी पात्र समाज के बने नियमों, रीति-रिवाजों को तोड़ना नहीं चाहते। कहानियों के पात्रों के संवाद अर्थगर्भित संक्षिप्त, नाटकीय तथा कहानीकार के उद्‌देश्य को साकार करने में सफल हुए हैं, वे चरित्रों का मनोवैज्ञानिक पक्ष उद्‌घाटित करने में सक्षम सिद्‌ध हुए हैं।

साधुराम दर्शक हिमाचल प्रदेश के होने के कारण 'जीत-हार', 'कंकाल हंसता है', 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'पर कटी तितली' आदि कहानियों में हिमाचल प्रदेश के आस-पास के परिवेश का चित्रण देश-काल वातावरण के अंतर्गत हुआ है तथा 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'ट्राई-साईकिल', 'एक वीतरागी के नोट्स', 'ड़ायरी के कुछ पन्ने', 'खलनायक', 'कंकाल' आदि कहानियों में महानगरीय परिवेश दिखाई देता है।

लेखक ने अपनी कहानियों में निम्नवर्गीय लोगों का चित्रण किया है, इससे स्पष्ट है कि जन सामान्यों की पीड़ा को उद्‌घाटित करना उनकी कहानियों का मुख्य उद्‌देश्य रहा हैं। उनकी कई कहानियों में मानव तथा मानवीयता में अटूट संबंध दृष्टिगोचर होता है एवं 'वसुधा कुटुंबकम' की भावना का प्रचार प्रसार करना यह अप्रत्यक्ष उद्‌देश्य अनुभव होता है। उनकी 'एक और सावित्री' तथा 'धारा बहती रही' कहानियाँ कर्मवादी तथा आशावादी हैं। जिन्हें पढ़कर पाठकों के हृदय में जीवन के प्रति आशावाद निर्माण होता हैं।

लेखक ने जनसामान्य लोगों की पीड़ा एवं समस्याओं को उद्‌घाटित किया है तथा उनकी कहानियाँ मानव और मानवीयता को साकार करती है। लेखक की भाषा से मानवीय संवेदनाएँ, अनुभूतियाँ मुखरित हुई हैं, परिणामस्वरूप उनकी कहानियाँ मनुष्य के हृदय का स्पंदन है। भाषा का प्रयोग पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल,

भावानुकूल एवं परिवेश अनुकूल हुआ है। कथावस्तु एवं पात्रों के भाव तथा विचार जगत् को उद्घाटित करने वाले संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का सार्थक प्रयोग हुआ है। अतः कहानियों को प्रभावात्मकता, भावों की गहराई, विचारों की सघनता प्रगट करने की सक्षमता उन्हें प्राप्त हुई है। भाषा प्रयोग की सक्षमता शैली प्रयोग से भी सिद्ध हुई है। इसमें आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, दृश्यशैली, स्वप्नशैली, पात्रहीन शैली, पूर्वदीप्तिशैली, वर्णनात्मक शैली आदि शैलियों के सार्थक प्रयोग से कहानियों का कला पक्ष सहज सुंदर बना है। सीधी-सादी भाषा शैली के प्रयोग से कहानी की आत्मा दब नहीं गई। जिस प्रकार अलंकारविहीन सौंदर्य अपने सहज-स्वाभाविक -प्राकृतिक सौंदर्य को निखार देता है वैसे साधुराम दर्शक जी के अभिव्यक्ति पक्ष में भी प्राकृतिक सौंदर्य है, जिससे उनकी आम मनुष्य की कहानी को सहज अकृत्रिम सौंदर्य प्रदान किया गया है।

निष्कर्षतः यह कहना गलत न होगा कि साधुराम दर्शक जी विवेच्य कहानियों में शिल्पगत आवश्यकता के आधार पर कलात्मक विशेषताएँ पाई जाती है भले ही उन्होंने कला की दृष्टि से व्यापक, मार्मिक तथा कलापूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं किए फिर भी उनकी कहानियाँ कलात्मक सफलता और शिल्प सौष्ठव का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ सूची

1. माधुरी खोसल - हिंदी के लघु उपन्यासों का शिल्प, पृ.31
2. आदर्श सक्सेना - हिंदी आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि, पृ.48
3. जैनेंद्र कुमार - साहित्य का श्रेय और प्रेय, पृ.370
4. डॉ.जवाहर सिंह - हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि, पृ.1
5. श्री ओम शुक्ल - हिंदी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास से उध्दृत , पृ.22
6. डॉ.लक्ष्मी नारायण लाल - हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, पृ.1
7. सुरेश बाबर - भीष्म सहानी के साहित्य का अनुशीलन, पृ.170
8. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री (कहानीसंग्रह),पृ.9
9. डॉ.लक्ष्मी नारायण लाल - हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, पृ.285
10. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री, 'एक और सावित्री', पृ.17
11. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - धारा बहती रही, पृ.9
12. प्रकाश दीक्षित - हिंदी कहानी, पृ.35-36
13. केवल गोस्वामी - बेहतर दुनिया के सपनों की कहानियाँ, 336/वसुध (पत्रिका)
14. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा - कहानी का रचना विधान, पृ.121
15. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - धारा बहती रही, पृ.4
16. त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग, पृ.287
17. मोहन साहिल - पाठक की ड़ायरी (सामाजिक इतिहास दर्शाती कहानियाँ) सर्जक (जनवरी-मार्च 2001), पृ.125
18. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - कंकाल हंसता है, पृ.129
19. वही, 'लगे रहिए मंगतराम जी' ,पृ.30-31
20. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - (भूमिका से उध्दृत)

21. दुर्गा प्रसाद मिश्र - कहानी कला की आधार शिलाएँ, पृ.129-130 से उद्धृत
22. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही (कहानीसंग्रह) पृ.40
23. वही, पृ.62
24. वही, पृ.61
25. वही, पृ.68
26. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री (कहानी संग्रह), पृ.15
27. वही, पृ.34
28. वही, पृ.57
29. वही, पृ.65
30. वही, पृ.69
31. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही (कहानी संग्रह), पृ.17
32. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह), पृ.68
33. वही, पृ. 64
34. वही, पृ.64
35. वही, पृ.40
36. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही (कहानी संग्रह), पृ.15
37. वही, पृ.34
38. वही, पृ.110
39. वही, पृ.115
40. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री (कहानी संग्रह), पृ.18
41. वही, पृ.58
42. वही, पृ.25
43. वही, पृ.27
44. वही, पृ.77
45. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह), पृ.15
46. वही, पृ.17

47. वही, पृ.32
48. वही, पृ.41
49. वही, पृ.125
50. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री (कहानी संग्रह), पृ.35
51. वही, पृ.57
52. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही (कहानी संग्रह), पृ.17
53. वही, पृ.25
54. वही, पृ.41
55. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह), पृ.13
56. वही, पृ.17
57. वही, पृ.22
58. वही, पृ.37
59. वही, पृ.95
60. साधुराम दर्शक - धाराा बहती रही (कहानी संग्रह), पृ.28
61. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही (कहानी संग्रह), पृ.38
62. वही, पृ.43
63. वही, पृ.19
64. वही, पृ.54
65. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री (कहानी संग्रह),पृ.94
66. वही, पृ.89
67. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह),पृ.11
68. वही, पृ.93
69. वही, पृ.69
70. वही, पृ.99
71. वही, पृ.106
72. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही (कहानी संग्रह),, पृ.12
73. वही, पृ.14

74. डॉ.सुभाष दुरूगकर - राही मासूम रजा का कथा-साहित्य,पृ.187

75. डॉ.प्रतापनारायण टंड़न - हिंदी कहानियों का शिल्प विधि का विकास, पृ.266

76. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही (कहानी संग्रह), पृ.78

77. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह), पृ.135

*****